**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो०9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **शब्द शक्ति**

 **आचार्य विश्वनाथ मम्मटक परिभाषा कें स्वीकार करैत ओहिमे क्रियाक बदला मे शक्ति शब्दक प्रयोग कएलनि अछि |**

 **एहि प्रकारसँ लक्षणाक व्यापार्क हेतु तीन तत्व आवश्यक अछि :-**

**1 मुख्यार्थ मे बाधा**

**2 मुख्यार्थ आ लक्ष्यार्थक योग ( सम्बन्ध )**

**3 रूढ़ि वा प्रयोजन द्वारा एनी अर्थक बोध**

**1 मुख्यार्थ मे बाधा :- जखन मुख्य अर्थक प्रतीति मे बाधा पडैत अछि अथवा ई ज्ञात हो जे वक्ता जाहि अर्थकें व्यक्त करए चाहैत अछि , ओ व्यक्त नहि हो त ओकरा मुख्यार्थ बाधा खेत अछि | मुख्यार्थ बाधाक दू गोट व्याख्या कएल गेल अछि – अन्वयानुपत्ति आ तात्पर्यानुपत्ति |**

**2 मुख्यार्थ आ लक्ष्यार्थक योग ( सम्बन्ध ) :- मुख्यार्थक बाधित भेला पर जे अन्य अर्थ ग्रहण कएल जाइत अछि ओकरा मुख्य अर्थक संग सम्बन्ध नितान्त आवश्यक अछि | इएह मुख्यार्थक योग अछि | मुख्यार्थक योगक संदर्भमे तात्स्थ्य , ताद्धर्म्य , तत्सामिप्य ,तत्साह्च्रर्य आ तादर्थ्यक उल्लेख कएल गेल अछि |**

**3 रूढ़ि वा प्रयोजन द्वारा अन्य अर्थक बोध : - लक्षणाक नियामक रूढ़ि होइत अछि प्रयोजन | रूढ़िक अर्थ होइत अछि प्रयोग – प्रवाह | एकरे दोसर शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे रूढ़िक अर्थ अछि प्रसिद्धि अर्थात कोनो विशेष प्रकार सँ कहबाक ढंग वा अभिप्राय विशेषक कारण वक्ताक कोनो विशेष (लाक्षणिक ) अर्थकें व्यक्त करब | उदाहरणक लेल ‘ तूं पूरा गधा छें ‘ कें देखल जा सकैत अछि | कोनो मित्र अपन मित्र सँ कहलक मित्र तौं पूरा गधा छै – मनुष्य गधा कोना भए सकैत अछि | अतः एतए मुख्यार्थमे बाधा अछि , किएक त कतय मनुष्य आ कतय गधा | मुदा ‘ गधा ‘ शब्दक अभिप्रेत अर्थ सेहो अछि ‘ मूर्ख ‘ जाहि शब्दक शक्तिसं अत्यंत मूर्खताक अर्थ व्यक्त होइत अछि ओकरा लक्षणा कहैत अछि | गधाक मूर्खता प्रसिद्ध अछि |**

 **उपर्युक्त विवेचनक आधार पर निष्कर्ष ई अछि जे लक्षणामे मुख्यार्थ तथा लक्ष्यार्थक परस्पर योग आवश्यक अछि , एकर अतिरिक्त रूढ़ि अथवा प्रयोजन मे सँ कोनो एकक होएब आवश्यक अछि |**

 **3 व्यंजना :- व्यंजना शब्दक निष्पत्ति वि + अन्जना सँ भेल अछि | वि उपसर्ग तथा अंज प्रकाशन धातु अछि | व्यंजनाक अर्थ अछि “ विशेष प्रकारक आँजन | “ आँजन लगौला सँ आँखिक ज्योति बढ़ि जाइत अछि | मुदा जखन विशेष प्रकारक आँजन लगाएल जाइत अछि तखन परोक्ष वस्तु सेहो दृष्टिगोचर होमए लगैत अछि | “ व्यंजनाक द्वारा एहि प्रकारक अप्रकप्ति अर्थ स्पष्ट होइत अछि | जखन अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करबामे असमर्थ भए जाइत अछि तखन व्यंजना शक्ति काव्यक नुकाएल गूढ़ सौन्दर्य कें प्रकट करैत अछि |**

 **आचार्य सभ एहि सौन्दर्य कें ध्वन्यर्थ , सूच्यर्थ , आक्षापार्थ , प्रतीयमानार्थ सेहो कहलनि अछि | आचार्य मम्मट व्यंग्यार्थक प्राप्तिक लेल वक्ता , ग्राहक , ध्वनिविकार , वाक्यान्वय वाच्य , सानिध्य , प्रकरण , देश , काल आदिक विशिष्टताक ध्यान आवश्यक बतौलनि अछि | हुनक कथन छनि जे एहि आधार पर कोनो शब्दक अभिधा आ लक्षणा सँ भिन्न अर्थ ध्वनित होइत अछि एहि क्रममे ओ कहैत छथि जे जेना सुन्दरीक मनोहर अंगक चारुताक अतिरिक्त सेहो हुनक सम्पूर्ण शरीर यष्टि मे एक विशेष प्रकारक लावण्य नामक वस्तु उल्लसित होइत रहैत अछि तहिना महाकविक सरस वाणी सँ उल्लसित होमएवला प्रतीयमानार्थ किछु दोसरे वस्तु होइत अछि |**

 **व्यंजनाक साहित्यशास्त्र मे महत्वपूर्ण स्थान अछि | एनी शास्त्र एकरा महत्व नहि दैत अछि | ध्वनिवादी आचार्य लोकनिक कथनानुसार साहित्यशास्त्रक आधारशिला व्यंजना वृत्तिये पर निर्भर रहैत अछि | किएक त एहि शास्त्र मे नीरस उक्ति रसिक साहित्यिक कें इष्ट नहि अछि | नैयायिक , वैयाकरण , मीमांसक आ वेदान्ती अभिधाक महत्व सँ संतुष्ट नहि भए जाए मुदा साहित्यशास्त्र त रस – प्रधान अछि, रसास्वादक बिना सहृदयक तृप्ति नहि होइछ आ ओहि रसाभिव्यक्तिक लेल व्यंजनावृत्तिक सत्ता नितांत आवश्यक अछि , जाहिमे वक्तोक्ति सभक प्रचुर प्रयोग कएल जाइत अछि |**

 **जखन अभिधा शक्ति अर्थ बतएबामे असमर्थ भए जैत अछि तखन लक्षणाक द्वारा अर्थ बतएबाक चेष्टा कएल जाइत छैक , मुदा किछु एहनो अर्थ होइत अछि जकर प्रतीति अभिधा एवं लक्षणा द्वारा नहि होइत अछि | एहन स्थितिमे एक तेसर शक्तिक आवश्यकता प्रतीति होइत अछि | अभिधा एवं लक्षणा शक्ति सभ जखन अपन – अपन काज कए शांत भए जाइत अछि तखन जाहि शक्तक द्वारा अर्थक ज्ञान होइत अछि ओकरा व्यंजना शब्द – शक्ति कहल जाइत अछि | व्यंजना मे अर्थ आरो सूक्ष्म भए जाइत अछि | एकरा मूल अर्थसँ कोनो सम्बन्ध नहि रहैछ :-**

 **‘ विरतास्वाभिधाद्यासु यथार्थों बोध्यते पर: |**

 **सा वृत्तिव्यन्जना नाम श्ब्दस्यार्थादिकस्य च ||**

 **आचार्य मम्मटक अनुसार संकेत नहि भेलाक कारण जखन अभिधा नामक शब्द व्यापार समर्थ नहि रहैछ आ प्रयोजनक प्रतीति मे हेतु ( मुख्यार्थ योग , रूढ़ि , तथा प्रयोजन ) नहि रहलाक कारण लक्षणा सेहो समर्थ नहि रहैत अछि तखन व्यंजनाक अतिरिक्त अन्य कोनो शब्द व्यापार नहि बचैछ :-**

 **“ यस्य प्रतीतिमाधातु लक्षणा समुपास्यते |**

 **फले शब्दैकगम्यत्र व्यन्जनान्नापरा क्रिया ||**

 **हेमचंद्रक अनुसार अभिधा शक्तिक द्वारा प्रतीत अर्थ सहृदय श्रोताक प्रतिभाक सहायता सं एक नव अर्थ कें द्योतित करैत अछि | एहि नव अर्थ कें द्योतित करएबला शक्ति व्यंजना अछि |**

 **व्यंजनाक स्पष्टीकरण हेतु संस्कृत काव्यशास्त्रक सर्वाधिक प्रचलित उदाहरण – “ गंगायां घोष: “ अछि | गंगा मे गाँवक स्थिति संभव नहि अछि | अतः लक्षणा सं ई आशय निकालैत अछि जे गंगाक तट पर गाँव अछि | कोनो शक्ति एहि अर्थ सं अधिक अर्थ नहि व्यक्त कए सकैत अछि | अतः वक्ताक अभिप्राय गामक पवित्रता एवं शीतलता कें व्यक्त करबाक लेल तेसर शक्तिक कल्पना नितांत अपरिहार्य अछि आ तेसर अर्थ व्यंजना शक्तिक द्वारा प्रकट होइत अछि | एहि प्रकार सं ‘ गंगामे घर अछि ‘ एहि उदाहरण मे शैव्य आ पावनत्वक प्रतीति व्यंजना शक्ति सं संभव अछि | गुणक परिभाषा स्वरूप तात्पर्य एवं भेद व्यंजना अर्थ संस्कार विशेष अछि , जकर कारण प्रतिभा अछि | एतावता ज्ञात होइत अछि जे काव्य – जगत मे शब्द – शक्ति सभक विशेष महत्व अछि | अर्थक समस्त चमत्कार शब्द – शक्तिये सभसँ चमत्कृत होइत अछि |**